श्री विमलनाथ विधान

-रचयित्री-
गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 470
ISBN-978-93-84003-81-4

श्री विमलनाथ विधान

–रचयित्री –

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी दिव्यशक्ति परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के परम शिष्य पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी के पाँचवे पीठाधीश पदारोहण मगसिर कृ. दशमी (5 दिसम्बर 2015) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com
Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि.सं. 2542, मगसिर कृ. दशमी	मूल्य
1100 प्रतियाँ	5 दिसम्बर 2015	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में सभी मनुष्यों का जीवन मंगलमयी हो, इसके लिए देवदर्शन, भगवान का अभिषेक, पूजन, भगवान की भक्ति, मण्डल विधानों का आयोजन मंगल साधन हैं। जिनेन्द्र देव की भक्ति, स्तुति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते-करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है। जैसे दूध में घी विद्यमान है वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम को पाकर, पूरे विश्व में ज्ञान का अलख जगाने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

वर्तमान समय में देखते हैं कि जब हर संसारी प्राणी दिन-रात अपने सांसारिक सुख साधनों को प्राप्त करने के लिय तन-मन से पूर्णरूपेण धनवृद्धि के लिये प्रयासरत रहता है। वहाँ उनके पास कुछ समय भी धर्म कार्यों के लिये शेष नहीं है। हर समय भोगोपभोग की सामग्री को एकत्र करने में ही उनका ध्यान रहता है। कई जन्मों के पुण्य उदय से ही मनुष्य का जिनधर्म एवं जिनवाणी के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है। जीव के शुभ-अशुभ भाव ही उसे तदनुसार फल देने वाले होते हैं। श्रावकों के लिये षट् आवश्यक कर्तव्यों में देवपूजा, स्वाध्याय आदि भी कहे गये हैं। जिनमें अनेक पूजा-विधानों को करके भगवान की भक्ति करने का अवसर मिल जाता है और फिर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा लिखी पूजाओं को करने से तो ''एक पंथ दो काज'' वाली सूक्ति चरितार्थ हो जाती है यानि भक्ति के साथ-साथ स्वाध्याय भी हो जाता है। अनेक छोटे बड़े विधान पू. माताजी की लेखनी से प्रसूत हो चुके हैं और निरंतर यह क्रम जारी है। उसी क्रम में **''श्री विमलनाथ विधान''** नामक यह पुस्तक भी ग्रंथमाला के माध्यम से प्रकाशित होकर आप तक पहुँच रही है। यह विधान आप सबके लिये मंगल प्रदान करने वाला हो, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

य एव नित्य-क्षणिकाऽऽदयो नया, मिथोऽनपेक्षाः स्व-पर-प्रणाशिनः।
त एव तत्त्वं विमलस्य ते मुनेः, परस्परेक्षाः स्व-परोपकारिणः।।

जैनधर्म के 13वें तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान ने कंपिलापुरी नगरी में पिता कृतवर्मा एवं माता जयश्यामा के महल में जन्म लिया। भगवान का जन्म माघ सुदी चतुर्थी को हुआ और इसी तिथि में भगवान ने दीक्षा धारण की। माघ सुदी छट्ठ को भगवान को केवलज्ञान और आषाढ़ वदी अष्टमी को मोक्ष अर्थात् निर्वाण की प्राप्ति हुई। भगवान की ऊँचाई दो सौ चालीस हाथ एवं साठ लाख वर्ष की आयु थी।

पंचकल्याणक की महिमा से युक्त ऐसे तीर्थंकर **श्री विमलनाथ भगवान** का यह विधान है। जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, सबसे प्राचीन साध्वी, दिव्यशक्ति, चारित्र चन्द्रिका परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म की विशेष प्रभावना करते हुए साहित्य लेखन, जिन मंदिर निर्माण, प्राचीन तीर्थों के जीर्णोद्धार आदि अनेक महान-2 कार्य किए हैं। 400 ग्रंथ पूज्य माताजी की लेखनी से प्रसूत हो चुके हैं, जिनमें कुछ ग्रंथ अभी प्रकाशित हैं। इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, सिद्धचक्र, शान्ति विधान, ऋषभदेव आदि 100 विधानों की शृंखला में यह तीर्थंकर श्री विमलनाथ भगवान का विधान भी चमत्कारिक विधान है।

इस विधान में पूज्य माताजी ने सर्वप्रथम मंगलाचरण करते हुए श्री विमलनाथ भगवान की स्तुति दी है। इसके बाद अर्हंत पूजा है। अर्हंत पूजा में अरिहंत परमेष्ठी के गुणों का वर्णन करते हुए लिखा है–

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो ! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।

अर्हंत पूजा के बाद श्री विमलनाथ भगवान की पूजा है, उनके पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं। इसके बाद भगवान के एक सौ आठ नामों का वर्णन करते हुए 108 मंत्र के 108 अर्घ्य हैं। जैसे–

'वृहद्वृहस्पति' प्रभु नाम है। सुरपति के गुरु सरनाम हैं।
पूजते ही मिले मोक्ष धाम है। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आओ पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। विमलनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।

108 अर्घ्य चढ़ाने के बाद में 108 बार जाप्य मंत्र और फिर जयमाला है। जयमाला में तीर्थंकर पद को प्राप्त कराने वाली सोलहकारण भावना का सुन्दर वर्णन है। प्रत्येक तीर्थंकरों ने पूर्व भवों में सोलहकारण भावना को भा करके तीर्थंकर पद को प्राप्त किया है, पंचकल्याणक को प्राप्त

किया है। दिव्यध्वनि से धर्मतीर्थ का प्रवर्तन किया है, अनंतानंत भव्यों को इस संसार से पार किया है और सौ इन्द्रों से वन्द्य होते हुए अपनी आत्मा के सुख को प्राप्त कर लिया है।

इस जयमाला में भगवान के समवसरण में विराजमान गणधर, मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका आदि की संख्या का भी वर्णन सुन्दर है। जैसे—

मंदर आदि गणीश, पचपन समवसरण में।
अड़सठ सहस मुनीश, गुणमणियुत तुम प्रणमें।।
गणिनी पद्मा आदि, तीन सहस इक लक्षा।
श्रमणी महाव्रतादि, गुणमणि भूषित दक्षा।।

जयमाला के बाद विधान की प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद मेरे द्वारा रचित भगवान विमलनाथ की जन्मभूमि कम्पिलपुरी तीर्थ पूजा, श्री विमलनाथ भगवान की आरती एवं कम्पिलपुरी तीर्थ की आरती है।

इस विधान में कुल पूजा-3, अर्घ्य-108 पूर्णार्घ्य-1 एवं 3 जयमालायें हैं। यह विधान सभी के जीवन में सुख, शान्ति एवं समृद्धि को प्रदान करावे, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें एवं दीर्घायु प्राप्त करें–

जिओ युग-युग हे माँ ज्ञानमती,
हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं।
रहो स्वस्थ चिरायु मातु श्री,
हम यही कामना करते हैं।।
पहले निज को तीर्थ बनाया,
फिर तीर्थों की कीर्ति बढ़ाया।
त्वं जीव-नंद-वर्धस्व माँ,
हम यही कामना करते हैं।
जिओ युग-युग हे माँ ज्ञानमती,
हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

दो शब्द

—आर्यिका स्वर्णमती

मलैर्विमुक्तो विमलो जिनस्त्वं, त्वदंघ्रिसेवा विमली करोति।
मनः पुनीते किल भाक्तिकानाम् , नमामि नित्यं विमलं विशुद्धयै।।

बीसवीं सदी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के 3 बार दर्शन करने वाली, उनसे अनुभव ज्ञान प्राप्त करने वाली, प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर ज्ञानमती नाम को सार्थक करने वाली, बीसवीं सदी की युगप्रवर्तिका, प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं।

पूज्य माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक लगभग 400 ग्रंथों की रचना की हैं जिनमें से अभी कुछ ग्रंथ अप्रकाशित हैं। आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान, स्तुति आदि सशक्त माध्यम है।

माताजी की लेखनी से लिखा गया एक–एक शब्द मोती की माला के समान सुशोभित है। पूज्य माताजी ने भगवान के सहस्रनाम मंत्र से लेखनी का शुभारम्भ किया। अष्टसहस्री ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद किया। षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ पर **'सिद्धान्त चिन्तामणि'** नाम से संस्कृत टीका 16 पुस्तकों की 3100 पृष्ठों में लिखकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। नियमसार ग्रंथ पर **'स्याद्वादचन्द्रिका'** नाम से संस्कृत टीका एवं समयसार ग्रंथ पर **'ज्ञानज्योति'** हिन्दी टीका लिखी है।

विधानों में इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, सिद्धचक्र, समवसरण, जम्बूद्वीप आदि बड़े विधानों के साथ–साथ शान्ति विधान आदि छोटे विधानों को मिलाकर 100 की संख्या में विधानों की रचना की है। 365 दिन में प्रतिदिन कहीं न कहीं पूज्य माताजी द्वारा रचित विधान होते ही रहते हैं। जम्बूद्वीप पर प्रतिदिन कोई न कोई विधान होता ही रहता है।

विधानों की श्रृंखला में यह **'श्री विमलनाथविधान'** बहुत ही सुन्दर विधान है। इस विधान में तीर्थंकर भगवान के नाम के एव उनके गुणों के अर्घ्य हैं।

पूज्य माताजी के ज्ञानगुण की पूजा करते हुए मैं यही भावना करती हूँ कि पूज्य माताजी के गुण मुझमें अवतरित हों। यह विधान मेरे जीवन में श्रुतज्ञान, केवलज्ञान को प्राप्त करावे, इसी मंगल भावना के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि–कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम, ग्वालियर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेद शिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ-मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	श्री विमलनाथ स्तुति	2
3.	श्री अर्हंत पूजा	3
4.	तीर्थंकर श्री विमलनाथ की पूजा	8
5.	पंचकल्याणक अर्घ्य	9
6.	108 अर्घ्य	11
7.	जयमाला	26
8.	प्रशस्ति	28
9.	श्री विमलनाथ जन्मभूमि कम्पिलपुरी तीर्थ पूजा	29
10.	भगवान श्री विमलनाथ की आरती	35
11.	कम्पिलपुरी तीर्थ की आरती	36

मण्डल विधान का नक्शा

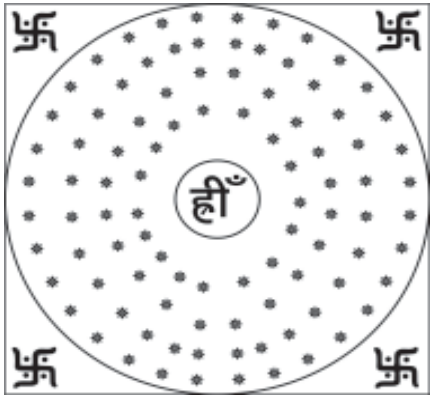

कुल पूजा–3, अर्घ्य 108, पूर्णार्घ्य–1, जयमाला–3।

श्री विमलनाथ विधान

मंगलाचरण

कर्ममलविनिर्मुक्तो, विमलाय नमो नमः।
तव नामस्मृतिर्लोकं, नैर्मल्यं कुरुते क्षणात्।।1।।

चित्ते मुखे शिरसि पाणिपयोजयुग्मे।
भक्तिं स्तुतिं विनतिमंजलिमंजसैव।।
चेक्रीयते चरिकरीति चरीकरीति।
यश्चर्करीति तव देव! स एव धन्यः।।2।।

नमो नमः सत्त्वहितंकराय, वीराय भव्याम्बुजभास्कराय।
अनन्तलोकाय सुरार्चिताय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय।।3।।

–पद्यानुवाद–

मन में भक्ति धरें मुख से, संस्तुती करें अति भक्ति भरें।
शिर से नमन करें करद्वय, कुड्मल पंकज अंजुली करें।।
इस विधि देव! तुम्हारी जो, भक्ति स्तुति नतिअंजुली करें।
धन्य वही हैं जीव जगत में, धन्य जन्म निज सफल करें।।2।।
नमो नमो हे सत्त्वहितंकर! भव्यकमलभास्कर हे ईश।
अनंत लोकपति सुर अर्चित जिन, नमूँ सुराधिप देव हमेश।।3।।

श्री विमलनाथ स्तुति

कांपिल्यपुरी पितु कृतवर्मा, माता जयश्यामा विख्याता।
शुभ ज्येष्ठ वदी दशमी प्रभु का, माता के गर्भ निवासा था।
निर्मल त्रय ज्ञान सहित स्वामी, मल रहित गर्भ में तिष्ठे थे।
सितमाघ चतुर्थी[1] के दिन में, इन्द्रों से पूजित जन्मे थे।।1।।

सित माघ चतुर्थी दीक्षा ली, सित माघ छट्ठ को ज्ञान हुआ।
आषाढ़ वदी अष्टमि तिथि में, पंचम गति को प्रस्थान हुआ।।
दो सौ चालीस कर तुंग तनु, प्रभु साठ लाख वर्षायु थी।
कनकच्छवि घृष्टी[2] लांछन तव, हे विमल! करो मम विमलमती।।2।।

मैं भाव कर्म और द्रव्यकर्म, नोकर्म मलों से भिन्न कहा।
मैं अमल अरूपी अविकारी, निश्चय नय से चित्पिंड कहा।।
चिच्चमत्कारमय ज्योतिपुंज, सहजानंदैक स्वभावी हूँ।
मैं केवलज्ञान अखंड पिंडमय, सुख चिद्रूप स्वभावी हूँ।।3।।

भगवन् ! ऐसी शक्ति दीजे, मैं मुझमें स्थिर हो जाऊँ।
अणुमात्र नहीं किंचित् मेरा, मैं पर से ममता बिसराऊँ।।
मैं तुमको प्रणमूं बार–बार, बस मम पूरी इक इच्छा हो।
एकाकी 'ज्ञानमती' प्रगटे, जहाँ पर की पूर्ण उपेक्षा हो।।4।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

1. किसी प्रति में चौदश तिथि है। 2. सूकर।

पूजा नं. १

श्री अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंक पंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुचि से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तू।
पीयूष तुल्य चरु लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।

मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बाहू हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सोहें ।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसु मंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा –

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

तीर्थंकर श्री विमलनाथ की पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

अमल विमल पद पाकर स्वामी, विमलनाथ कहलाये।
भाव-द्रव्य-नोकर्म मलों से, रहित शुद्ध कहलाये।।
आत्मा के संपूर्ण मलों को, धोने हेतु जजूँ मैं।
आह्वानन स्थापन करके, पूजा करूँ भजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-दोहा –

पद्मसरोवर नीर शुचि, जिनपद धार करंत।
जन्म जरा मृति नाश हो, आतम सुख विलसंत।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन सुरभि, जिनपद में चर्चंत।
मिले आत्मसुख संपदा, निजगुण कीर्ति लसंत।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम तंदुल धवल, पुंज चढ़ाऊँ नित्य।
नव निधि अक्षय संपदा, मिले आत्मसुख नित्य।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हरसिंगार प्रसून की, माल चढ़ाऊँ आज।
सर्वसौख्य आनंद हो, मिले स्वात्म साम्राज।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली इमरती, चरू चढ़ाऊँ भक्ति।
मिले आत्म पीयूष रस, मोक्ष प्राप्ति की शक्ति।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक से आरती, करूँ तिमिर परिहार।
जगे ज्ञान की भारती, भरें सुगुण भंडार।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेवते हो सुरभि, आतम सुख विलसंत।
कर्म जलें शक्ती बढ़े, मिले निजात्म अनंत।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेब आम अंगूर ले, फल से पूजूँ आज।
मिले मोक्षफल आश यह, सफल करो मम काज।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य ले, रजत पुष्प विलसंत।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति से, ''ज्ञानमती'' सुख कंद।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवर पद अरविंद।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

मौलसिरी बेला जुही, पुष्पांजलि विकिरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निज निधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद –

पुरी कंपिला नाम, पितु कृतवर्मा गृह में।
जयश्यामा वर मात, गर्भ बसे शुभ तिथि में।।
ज्येष्ठ वदी दश श्रेष्ठ, सुरपति नरपति पूजें।
नमूँ आज शिर टेक, जजूँ कर्म अरि धूजें।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णादशम्यां श्रीविमलनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में त्रिभुवननाथ, चौथ माघ सुदि तिथि में।
सुरनर हुये सनाथ, शांति हुई तिहुँजग में।।
मेरु शिखर ले जाय, इन्द्र किया जन्मोत्सव।
पूजूँ शीश झुकाय, जन्मकल्याण महोत्सव।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां श्रीविमलनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बर्फ विनशती देख, चित वैराग्य समाया।
माघ चतुर्थी शुक्ल, सुरगण शीश नमाया।।
गये सहेतुक बाग, देवदत्त पालकि में।
नमूँ नमूँ नत माथ, तपकल्याणक प्रभु मैं।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाचतुर्थ्यां श्रीविमलनाथतीर्थंकरतपःकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ श्रेष्ठ, जामुनतरु के नीचे।
नशा घाति का क्लेश, केवलज्ञान उदय से।।
समवसरण प्रभु आप, गगनांगण में शोभे।
ज्ञानकल्याणक नाथ, जजत भावश्रुत दीपे।।4।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाषष्ठ्यां श्रीविमलनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमलनाथ जिनराज, श्रीसम्मेदशिखर से।
कर्म अघाति विनाश, मुक्तिधाम में पहुँचे।।
वदि अष्टमि आषाढ़, मोक्षकल्याणक तिथि है।
मोहारि को पछाड़, जजत लहूँ निज सुख है।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाअष्टम्यां श्रीविमलनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

विमलनाथ त्रयमलरहित, अमल सौख्य दातार।
अर्घ्य चढ़ाकर नित जजूँ, पाऊँ निजसुख सार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

108 अर्घ्य

सोरठा

समवसरण प्रभु आप, त्रिभुवन की लक्ष्मी धरे।
पूजूँ तुम चरणाब्ज, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्

चाल-पूजों पूजों श्री.....

'वृहद्वृहस्पति' प्रभु नाम है। सुरपति के गुरू सरनाम हैं।
पूजते ही मिले मोक्ष धाम है। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। विमलनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।1।।

ॐ ह्रीं बृहद्वृहस्पतये श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वाग्मी' तुम्हीं त्रिभुवन में। शुभवचन द्वादशों गण में।
पूजते पाप नश जाय क्षण में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।2।।

ॐ ह्रीं वाग्मिने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वाचस्पती' आप जग में। वचनों के स्वामि सहज में।
नाम लेते मिले शांति मन में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।3।।

ॐ ह्रीं वाचस्पतये श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम नाम 'उदारधी' है। ज्ञानदान का मूल वही है।
पूजते आप सुख की मही हैं। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।4।।

ॐ ह्रीं उदारधिये श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'मनीषी' कहाये। केवलज्ञान सदबुद्धि पाये।
शत इंद्र सदा गुण गायें। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।

आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। विमलनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।5।।

ॐ ह्रीं मनीषिणे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आपको ही 'धिषण' साधु कहते। सर्वज्ञानैक बुद्धी धरते।
भक्त पूजत स्वपर ज्ञान लहते। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।6।।

ॐ ह्रीं धिषणाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'धीमान्' त्रैलोक्य में हैं। ज्ञान पंचम धरें श्रेष्ठ ही हैं।
भक्त भी स्वात्म ज्ञानी बने हैं। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।7।।

ॐ ह्रीं धीमते श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शेमुषीश' आप ही हैं। सर्व ही ज्ञान के नाथ ही हैं।
दीजिये अब मुझे सुमती है। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।8।।

ॐ ह्रीं शेमुषीशाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'गिरांपति' जग में। सर्वभाषामयी ध्वनि भवि में।
हो सत्य महाव्रत मुझमें। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।9।।

ॐ ह्रीं गिरांपतये श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'नैकरूप' मुनिगण में। विष्णु ब्रह्म महेश्वर सच में।
भक्त नाशें करम रिपु क्षण में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।10।।

ॐ ह्रीं नैकरूपाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'नयोत्तुंग' मानें। सब नयों से श्रेष्ठ बखानें।
मन अनेकांत सरधाने। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।11।।

ॐ ह्रीं नयोत्तुंगाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नैकात्मा' तुम्हीं त्रिभुवन में। गुण बहुते धरें प्रभु निज में।
गुणपूर्ण भरूँ मैं निज में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।12।।

ॐ ह्रीं नैकात्मने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'नैकधर्मकृत्' तुम हो। बहुधर्म वस्तु के कह हो।
निज धर्म अनंत मुझे हों। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।13।।

ॐ ह्रीं नैकधर्मकृते श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अविज्ञेय' ही हो। जन जानन योग्य नहीं हो।
मुझे आत्म स्वभाव प्रगट हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।14।।

ॐ ह्रीं अविज्ञेयाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अप्रतर्क्यात्मा'। न तर्कादि गोचर महात्मा।
मुझे कीजे तुरत अंतरात्मा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।15।।

ॐ ह्रीं अप्रतर्क्यात्मने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'कृतज्ञ' कहे हो। सभी कृत्य तुम्हीं जानते हो।
नाथ! मुझमें यही गुण प्रगट हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।16।।

ॐ ह्रीं कृतज्ञाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृतलक्षण' आप भुवन में। वस्तु लक्षण कहते हो ध्वनि में।
मैं धारूँ सुलक्षण हृदय में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।17।।

ॐ ह्रीं कृतलक्षणाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'ज्ञानगर्भ' तुम ही हो। सब ज्ञेय सुज्ञान मही हो।
मेरा भी ज्ञान सही हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वर नामा। जिससे पावें निजातम धामा।
सर्व कर्मों का होवे खातमा। विमलनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।18।।

ॐ ह्रीं ज्ञानगर्भाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'दयागर्भ' त्रिभुवन में। तुम दयासिंधु भविजन में।
मैं धरूँ दया निजपर में। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।19।।

ॐ ह्रीं दयागर्भाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'रत्नगर्भ' मुनिनाथा। रत्न वर्षे पंचदश मासा।
मैं नमूँ नमाकर माथा। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।20।।

ॐ ह्रीं रत्नगर्भाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'प्रभास्वर' ही हो। त्रैलोक्य प्रकाशि रवी हो।
मुझ हृदय ज्ञान ज्योती हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।21।।

ॐ ह्रीं प्रभास्वराय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पद्मगर्भ' तुम सच में। रहे कमलाकार गरभ में।
लहूँ गर्भ प्रभो! तुम सम मैं। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।22।।

ॐ ह्रीं पद्मगर्भाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'जगद्गर्भ' तुम भासें। तुम ज्ञान में जग प्रतिभासे।
हो ज्ञान मेरा तम नाशे। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।23।।

ॐ ह्रीं जगद्गर्भाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'हेमगर्भ' तुम ही हो। गर्भ बसत स्वर्णमय भू हो।
मुझ रोग शोक हर तुम हो। सुनाम मंत्र अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।24।।

ॐ ह्रीं हेमगर्भाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुदर्शन' मानें। तुम दर्शन सुखकर जानें।
पूजत सब संकट हानें। विमलनाथ अर्चन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें।।25।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रहरनकलिका छंद

प्रभु तुम 'लक्ष्मीवान्' भुवि गुरू हो।
अन्तर बहि संपद धर जिन हो।।
तुम जजत सुनाम सकल सुख हो।
दुख दरिद विनाश, अतुलनिधि हो।।26।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीवते श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'त्रिदशअध्यक्ष' सुर गणपति हो।
त्रिभुवन धन भाने अतुल रवि हो।।तुम.।।27।।

ॐ ह्रीं त्रिदशाध्यक्षाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अतुल 'द्रढ़ीयन्' इस जग में।
नहिं तुम सम हो दृढ़ मुनि जग में।।तुम.।।28।।

ॐ ह्रीं द्रढ़ीयसे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब त्रिभुवन ईश तुमहि 'इन' हो।
मुझ सब अघ नाशत सुखप्रद हो।।तुम.।।29।।

ॐ ह्रीं इनाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समरथयुत 'ईशित' तुमहि कहे।
मुझ अहित निवारण तुम पद हैं।।तुम.।।30।।

ॐ ह्रीं ईशित्रे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'मनोहर' त्रिभुवन में।
हरि हर परब्रह्म न तुम सम हैं।।
तुम जजत सुनाम सकल सुख हो।
दुख दरिद विनाश, अतुलनिधि हो।।31।।

ॐ ह्रीं मनोहराय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु सुभग 'मनोज्ञांग' अतिशय ही।
भवि जपत तुम्हें दुख विनशत ही।।तुम.।।32।।

ॐ ह्रीं मनोज्ञांगाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय धृति 'धीर' भविक गण में।
तुम जपत हि पीर टरत क्षण में।।तुम.।।33।।

ॐ ह्रीं धीराय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय 'गम्भीर शासन' जग में।
शिवपद कर धर्म शरण जग में।।तुम.।।34।।

ॐ ह्रीं गम्भीरशासनाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभय 'धरमयूप' शुभ धरम हो।
सुर सुखप्रद नाथ! मुकति गृह हो।।तुम.।।35।।

ॐ ह्रीं धर्मयूपाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहिं 'दयायाग' सुखप्रद हो।
सब अशुभ हरो सुअभयप्रद हो।।तुम.।।36।।

ॐ ह्रीं दयायागाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखद 'धरमनेमि' जिनवर हो।
इस जग मधि आप, धरम धुरि हो।।तुम.।।37।।

ॐ ह्रीं धर्मनेमये श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'मुनिश्वर' मुनिपति हो।
सब गुण मणि भूषित सुखनिधि हो।।तुम.।।38।।

ॐ ह्रीं मुनीश्वराय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धरमचक्रायुध' यम अरि हो।
तुम दरसन से मुझ अघ क्षय हो।।तुम.।।39।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रायुधाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजगुणरत 'देव' सुरगप्रद हो।
मुझ गुणमणि देव परमगति हो।।तुम.।।40।।

ॐ ह्रीं देवाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखद 'करमहा' अघरिपु हन हो।
समरस सुखदा शिवतियपति हो।।तुम.।।41।।

ॐ ह्रीं कर्मघ्ने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुमहि 'धरमघोषण' शिव भरता।
अतिशय शिव के गुणमणि करता।।तुम.।।42।।

ॐ ह्रीं धर्मघोषणाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'अमोघवच' जगत में।
तुम विरथ न वाक्य कबहुँ सच में।।तुम.।।43।।

ॐ ह्रीं अमोघवाचे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भुवन मधि 'अमोघाज्ञ' तुमहि हो।
निष्फल नहिं आज्ञा सुर शिर धर्‌यो।।तुम.।।44।।

ॐ ह्रीं अमोघाज्ञाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु जिनवर 'निर्मल' शुचिकर हो।
मल विरहित कर्म रहित शिव हो।।तुम.।।45।।

ॐ ह्रीं निर्मलाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सु 'अमोघशासन' तुम हो।
नहिं निष्फल शासन कबहुंक हो।।तुम.।।46।।

ॐ ह्रीं अमोघशासनाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुमहि 'सुरूप' असुर सुर में।
नहिं तुम सम रूप दिखत जग में।।तुम.।।47।।

ॐ ह्रीं सुरूपाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम 'सुभग' महाप्रभु अतिशय हो।
बहुविध शुभ ऐश्वर गुण युत हो।।
तुम जजत सुनाम सकल सुख हो।
दुख दरिद विनाश, अतुलनिधि हो।।48।।

ॐ ह्रीं सुभगाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कुछ पर त्याग वनन विचरें।
जिनवर तुम 'त्यागि' सुरन उचरें।।तुम.।।49।।

ॐ ह्रीं त्यागिने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वपर समय जानकर शिव भये।
अनुपम प्रभु 'ज्ञातृ' शिवप्रद भये।।तुम.।।50।।

ॐ ह्रीं ज्ञात्रे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रध्वजा

स्वामी 'समाहित' सुसमाधि ध्यानी।
प्राणी समाधान लहें तुम्हीं से।
पूजूँ विमलनाथ सुमंत्र वंदूँ।
मोहारिशत्रू क्षण में नशेगा।।51।।

ॐ ह्रीं समाहिताय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'सुस्थित' सुख से निवासा।
मुक्तीरमा आप स्वयं वरे हैं।।पूजूँ.।।52।।

ॐ ह्रीं सुस्थिताय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरोग्य आत्मा प्रभु 'स्वास्थ्यभाक्' हो।
संसार व्याधी नहिं पूर्णस्वस्था।।पूजूँ.।।53।।

ॐ ह्रीं स्वास्थ्यभाजे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'स्वस्थ' स्वामी भवरोग नाहीं।
आत्मस्थ हो सर्वविकार शून्या।।पूजूँ.।।54।।

ॐ ह्रीं स्वस्थाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'नीरजस्को' नहिं कर्मधूली।
मेरे प्रभो! कर्म समूल नाशो।।पूजूँ.।।55।।

ॐ ह्रीं नीरजस्काय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'निरुद्धव' जग में कहाते।
संपूर्ण ही उत्सव इंद्र कीने।।पूजूँ.।।56।।

ॐ ह्रीं निरुद्धवाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तुम्हीं कर्म 'अलेप' मानें।
मेरे सभी लेप हटाय दीजे।।पूजूँ.।।57।।

ॐ ह्रीं अलेपाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'निष्कलंकात्मन्' इन्द्र पूजें।
मैं भी सदा शीश नमाय वंदूँ।।पूजूँ.।।58।।

ॐ ह्रीं निष्कलंकात्मने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वीतरागी' गतराग द्वेषा।
रागादि मेरे मन से हटा दो।।पूजूँ.।।59।।

ॐ ह्रीं वीतरागाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'गतस्पृह' तुम ही यहाँ पे।
इच्छा निवारी जग के गुरू हो।।पूजूँ.।।60।।

ॐ ह्रीं गतस्पृहाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सु 'वश्येन्द्रिय' आप ही हैं।
पाँचों ही इन्द्री वश में किया था।।पूजूँ.।।61।।

ॐ ह्रीं वश्येंद्रियाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानें 'विमुक्तात्मन्' आप ही हो।
कर्मारि बन्धन तुम काट डाले।।पूजूँ.।।62।।

ॐ ह्रीं विमुक्तात्मने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'निःसपत्ना' नहिं शत्रु कोई।
सम्पूर्ण प्राणी तुम मित्र मानें।।पूजूँ.।।63।।

ॐ ह्रीं निःसपत्नाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीता स्व इन्द्रीय 'जितेन्द्रिय' हो।
जीतूं स्व इन्द्री प्रभु शक्ति देवो।।
पूजूँ विमलनाथ सुमंत्र वंदूँ।
मोहारिशत्रू क्षण में नशेगा।।64।।

ॐ ह्रीं जितेंद्रियाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्ण शांतीश 'प्रशांत' माने।
वंदूँ तुम्हें शान्ति मिले मुझे भी।।पूजूँ.।।65।।

ॐ ह्रीं प्रशांताय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आनन्तधामर्षि' ऋषि गणों में।
तेजस्विता आप अनन्त धारो।।पूजूँ.।।66।।

ॐ ह्रीं अनन्तधामर्षये श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी यहाँ 'मंगल' आप ही हैं।
नाशो अमंगल भवि प्राणियों के।।पूजूँ.।।67।।

ॐ ह्रीं मंगलाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पापारि नाशा 'मलहा' कहाये।
सम्पूर्ण धोये मल कर्म जैसे।।पूजूँ.।।68।।

ॐ ह्रीं मलघ्ने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'अनघ' पाप निमूल नाशा।
कीजे सभी पाप विनाश मेरा।।पूजूँ.।।69।।

ॐ ह्रीं अनघाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुये 'अनीदृक्' नहिं आप जैसा।
इन्द्रादि वन्दे रुचि से तुम्हें ही।।पूजूँ.।।70।।

ॐ ह्रीं अनीदृशे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'उपमाभुत' इन्द्र भी तो।
दें आपकी तो उपमा तुम्हीं से।।पूजूँ.।।71।।

ॐ ह्रीं उपमाभूताय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो भव्य भाग्योदय हेतु स्वामी।
'दिष्टी' कहाते जग में इसी से।।पूजूँ.।।72।।

ॐ ह्रीं दिष्टये श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'दैव' प्राणी शुभ भाग्य होते।
वंदूँ तुम्हें दैव समस्त नाशूँ।।पूजूँ.।।73।।

ॐ ह्रीं दैवाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्यज्ञानी नभ में विहारी।
होते 'अगोचर' नहिं सर्व जानें।।पूजूँ.।।74।।

ॐ ह्रीं अगोचराय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रूपादि से शून्य 'अमूर्त' स्वामी।
आत्मा अमूर्तीक मिले मुझे भी।।पूजूँ.।।75।।

ॐ ह्रीं अमूर्ताय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखमा-छंद

'मूर्तीमन्' की पूजा करिये।
नाहीं मन में शंका धरिये।।
विमलनाथ को पूजूँ नित ही।
व्याधी तन से भागे झट ही।।76।।

ॐ ह्रीं मूर्तिमते श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एक' तुम्हें ही साधू कहते।
दूजा नहिं कोई भी तुमसे।।विमल.।।77।।

ॐ ह्रीं एकाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नानागुण की पूर्ती तुम में।
स्वामी तुम ही 'नैक' जगत में।।विमल.।।78।।

ॐ ह्रीं नैकाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'नानैकतत्त्वदृक्' तुम ही।
आत्मा तज ना देखे कुछ ही।।विमल.।।79।।

ॐ ह्रीं नानैकतत्त्वदृशे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अध्यातमगम्या' हो प्रभु जी।
आत्म ग्रंथ से जाने मुनि जी।।
विमलनाथ को पूजूँ नित ही।
व्याधी तन से भागे झट ही।।80।।

ॐ ह्रीं अध्यात्मगम्याय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माने 'अगम्यात्मा' तुम हो।
मिथ्यादृश ना जाने तुम को।।विमल.।।81।।

ॐ ह्रीं अगम्यात्मने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'योगविद्' की जो शरणे।
मुक्तीतिय को निश्चित परणे।।विमल.।।82।।

ॐ ह्रीं योगविदे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'योगिवंदित' हो जग में।
योगी जन ध्याते भी मन में।।विमल.।।83।।

ॐ ह्रीं योगिवंदिताय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वत्रग' व्यापा त्रै जग को।
सो ही ज्ञान अपेक्षा समझो।।विमल.।।84।।

ॐ ह्रीं सर्वत्रगाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सदाभावी' हो जग में।
तिष्ठो नित ना नाश स्वप्न में।।विमल.।।85।।

ॐ ह्रीं सदाभाविने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'त्रिकालविषयार्थ' सुदृक् ही।
त्रैकालिक जाना सब कुछ ही।।विमल.।।86।।

ॐ ह्रीं त्रिकालविषयार्थदृशे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शंकर' भी भव्यन सुख दो।
नाशो मुझ दोषादी दुख को।।विमल.।।87।।

ॐ ह्रीं शंकराय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'शंवद' शं सौख्यं कर ही।
तीनों जग में वंदे मुनि भी।।विमल.।।88।।

ॐ ह्रीं शंवदाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! चित्त अश्व को जीता।
'दांत' कहाये धर्म समेता।।विमल.।।89।।

ॐ ह्रीं दांताय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामिन्! दमी इंद्रियाँ दमते।
पूरी मन की इच्छा करते।।विमल.।।90।।

ॐ ह्रीं दमिने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षान्तिपरायण' मानें तुमही।
ध्याते तुम को मृत्यु नशे ही।।विमल.।।91।।

ॐ ह्रीं क्षान्तिपरायणाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'अधिप' बखाने जग में।
इंद्रादिक पूजें आनन्द में।।विमल.।।92।।

ॐ ह्रीं अधिपाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'परमानंद' तृप्त हो।
आत्मा मुझ आनंद मगन हो।।विमल.।।93।।

ॐ ह्रीं परमानंदाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो नाथ! 'परात्मज्ञ' अतुल ही।
जाना पर को आत्मा निज भी।।विमल.।।94।।

ॐ ह्रीं परात्मज्ञाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो आप 'परात्पर' भी जग में।
श्रेष्ठो मधि श्रेष्ठाधिप सब में।।विमल.।।95।।

ॐ ह्रीं परात्पराय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'त्रिजगद्वल्लभ' तुम हो।
तीनों जग के मनभावन हो।।विमल.।।96।।

ॐ ह्रीं त्रिजगद्वल्लभाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी तुम 'अभ्यर्च्य' सुरन से।
सौ इंद्रन से साधू गण से।।
विमलनाथ को पूजूँ नित ही।
व्याधी तन से भागे झट ही।।97।।

ॐ ह्रीं अभ्यर्च्याय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी 'त्रिजगन्मंगलोदय' हो।
तीनों जग में मंगल कर हो।।विमल.।।98।।

ॐ ह्रीं त्रिजगन्मंगलोदयाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्री' तुम हो।
सौ इंद्रन से पूज्य चरण हो।।।विमल.।।99।।

ॐ ह्रीं त्रिजगन्पतिपूज्यांघ्रये श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्रीलोकाग्रशिखामणि' जिन हो।
लोक शिखर से चूड़ामणि हो।।विमल.।।100।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकाग्रशिखामण्ये श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाराच-छंद

'अनत्ययो' न नाश हो अनंत काल आपका।
मुझे सुखी सदा करो न अंत हो सुज्ञान का।।
मुनीन्द्र नाम विमलनाथ ध्यावते सुध्यान में।
जजूँ सदैव मैं यहाँ लहूँ निजात्म धाम मैं।।101।।

ॐ ह्रीं अनत्ययाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनाशवान्' भोजनादि से विहीन आप हैं।
महान तप किया प्रभो समस्त वीश्वास्य हैं।।मुनीन्द्र.।।102।।

ॐ ह्रीं अनाश्वते श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'अधीक' उत्कृष्ट आत्मा तुम्हीं कहे।
सुपाय वास्तवीक सौख्य को 'अधिक' तुम्हीं रहे।।मुनीन्द्र.।।103।।

ॐ ह्रीं अधिकाय श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक के गुरू 'अधीगुरू' तुम्हीं महान हो।
नमाय माथ को सदा सुआप को प्रणाम हो।।मुनीन्द्र.।।104।।

ॐ ह्रीं अधिगुरुवे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगी' सुवाणि आपकी अतीव शोभना कही।
अनंत दुःख से निकाल मोक्ष में धरे वही।।मुनीन्द्र.।।105।।

ॐ ह्रीं सुगिरे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुमेधसा' महान् बुद्धि से सुकेवली भये।
प्रभो! अपूर्व ज्ञान दो अनंत गुण मिले भये।।मुनीन्द्र.।।106।।

ॐ ह्रीं सुमेधसे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पराक्रमी समस्त कर्म नाश हेतु शूर हो।
अतेव 'विक्रमी' कहावते अपूर्व सूर्य हो।।मुनीन्द्र.।।107।।

ॐ ह्रीं विक्रमिणे श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोक 'स्वामि' हो समस्त भव्य जीव पालते।
अनंत धाम में धरो भवाब्धि से निकालते।।मुनीन्द्र.।108।।

ॐ ह्रीं स्वामिने श्रीविमलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

वृहद्वृहस्पति आदि एक सौ आठ मंत्र को नित मैं पूजूँ।
सर्व अमंगल दोष नशाकर, आधि व्याधि संकट से छूटूँ।।
भूत प्रेत डाकिनि शाकिनि भी, तुम भक्तों से दूर भगे हैं।
नित नव मंगल संपति संतति यश भाग्योदय श्रेष्ठ जगे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं बृहद्वृहस्पत्यादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रसमन्विताय श्रीविमलनाथ-तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य — ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय नमः।

(हरे पुष्प, लौंग, या पीले चावल से 108 बार जाप्य मंत्र करें)

जयमाला

-दोहा-

पूरब भव में आपने, सोलहकारण भाय।
तीर्थंकर पद पाय के, तीर्थ चलाया आय।।1।।

-रोला छंद-

दर्श विशुद्धि प्रधान, नित्यप्रती प्रभु ध्या के।
अष्ट अंग से शुद्ध, दोष पच्चीस हटा के।।
मन वच काय समेत, विनय भावना भायी।
मुक्ति महल का द्वार, भविजन को सुखदायी।।2।।

व्रतशीलों में आप, नहिं अतिचार लगाया।
संतत ज्ञानाभ्यास, करके कर्म खपाया।।
भवतन भोग विरक्त, मन संवेग बढ़ाया।
शक्ती के अनुसार, चउविध दान रचाया।।3।।

बारहविध तप धार, आतम शक्ति बढ़ाई।
धर्मशुक्ल से सिद्ध, साधु समाधि कराई।।
दशविध मुनि की नित्य, वैयावृत्य किया था।
सर्व शक्ति से पूर्ण, बहु उपकार किया था।।4।।

श्री अर्हंत जिनेन्द्र, भक्ति हृदय में धर के।
सूरि परम परमेश, गुण संस्तवन उचर के।।
उपाध्याय गुरु देव, शिवपथ के उपदेष्टा।
प्रवचन भक्ति समेत, गुणगण भजा हमेशा।।5।।

षट् आवश्यक नित्य, करके दोष नशाया।
हानि रहित परिपूर्ण, निज कर्तव्य निभाया।।
मार्ग प्रभावन पाय, धर्म महत्त्व बढ़ाया।
प्रवचन में वात्सल्य, कर निज गुण प्रगटाया।।6।।

सोलहकारण भाय, पंचकल्याणक पाया।
दिव्यध्वनी से नित्य, धर्म सुतीर्थ चलाया।।
भव्य अनंतानंत, जग से पार किया है।
सौ इन्द्रों से वंद्य, निज सुख सार लिया है।।7।।

मंदर आदि गणीश, पचपन समवसरण में।
अड़सठ सहस मुनीश, गुणमणियुत तुम प्रणमें।।
गणिनी पद्मा आदि, तीन सहस इक लक्षा।
श्रमणी महाव्रतादि, गुणमणि भूषित दक्षा।।8।।

श्रावक थे दो लाख, धर्मध्यान में तत्पर।
कही श्राविका चार, लाख भक्ति में तत्पर।।
साठ धनुष तनु तुंग, साठ लाख वर्षायू।
घृष्टी[1] चिन्ह सुवर्ण, वर्ण देह गुण गाऊँ।।9।।

चिच्चैतन्य स्वरूप, चिन्मय ज्योति जलाऊँ।
पूर्ण ज्ञानमति रूप, परम ज्योति प्रगटाऊँ।।
तुम प्रसाद जिन विमल! पूरी हो मम आशा।
इसीलिए पदकमल, नमूँ नमूँ धर आशा।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेरछंद –

जो भव्य विमलनाथ का विधान करेंगे।
वे भावकर्म द्रव्यकर्म हान करेंगे।।
फिर स्वात्मसौख्य पाय अमल धाम बसेंगे।
कैवल्य 'ज्ञानमती' रवि प्रकाश करेंगे।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

1. शूकर।

प्रशस्ति

–नरेन्द्र छंद –

तीर्थंकर के चरण कमल में, झुक-झुक शीश नमाऊँ।
सरस्वती का वंदन करके, त्रिविध साधु गुण गाऊँ।।
चौबीसों तीर्थंकर जिनवर, मंगल कर्ता जग में।
इनकी भक्ती से विधान यह, रचा सौख्यकर मैंने।।1।।

मूलसंघ में कुंदकुंद, आम्नाय प्रसिद्ध हुआ है।
गच्छ सरस्वति बलात्कार गण, इसमें मान्य हुआ है।।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, आचार्य शांतिसागर जी।
इनके प्रथम शिष्य पट्टाधिप, गुरू वीरसागर जी।।2।।

मुझे आर्यिका दीक्षा लेकर, ज्ञानमती कर जग में।
ज्ञानामृत कण से पावन कर, सार्थक नाम दिया मे।।
विमलनाथ जिनवर विधान यह, रचा प्रभू भक्ती से।
गणिनी ज्ञानमती कृत पूजा, करो भव्य भक्ती से।।3।।

महावीर शासन इस जग में, जब तक मंगलमय हो।
हस्तिनागपुर में सुमेरु सह, जम्बूद्वीप स्थिर हो।।
चौबीसी तीर्थंकर मंदिर, हो स्थायी जब तक।
तब तक विमलनाथ की भक्ती, जग में हो मंगलप्रद।।4।।

–दोहा–

विमलनाथ तीर्थेश प्रभु, विमलबुद्धि दातार।
विमल ज्ञानमति हेतु मैं, नमूं नमूं शत बार।।5।।

इति श्रीविमलनाथविधानं संपूर्णम्।

।।इति शं भूयात्।।

पूजा नं. ३

श्री विमलनाथ जन्मभूमि कम्पिलपुरी तीर्थ पूजा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

स्थापना (कुसुमलता छन्द)

तीर्थंकर श्री विमलनाथ की, जन्मभूमि काम्पिल्यपुरी।
गर्भ जन्म तप ज्ञान चार, कल्याणक से पावन नगरी।।
आह्वानन स्थापन करके, पूजूँ कम्पिल तीरथ को।
जिनवर की पद धूलि नमन कर, गाऊँ जिनगुण कीरत को।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (अडिल्ल छन्द)

गंग नदी का नीर, कलश में भर लिया।
पाऊँ भवदधि तीर, धार पद कर दिया।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वंदूँ कम्पिलधाम, भव भव दुख से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर घिसकर के लाइये।
जिनवर चरणकमल से, पूज्य बनाइये।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिलधाम भव भव दुख से छूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्जवल अक्षत के पुंज हैं।
अक्षयपद के हेतु निजातम कुंज हैं।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्प चमेली बेला पुष्प चढ़ाय के।
कामव्यथा नश जाय स्वात्म सुख पाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बावर आदि बहुत पकवान ले।
क्षुधा व्याधि नाशन हित नाथ चढ़ाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजतथाल में घृत का दीप जलाय के।
मोहनाश हो तीरथ आरति गाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु की शुद्ध धूप बनवाय के।
कर्म नष्ट हो प्रभु के निकट जलाय के।।

विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिलधाम भव भव दुख से छूटूँ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूरों का गुच्छा सुंदर लाय के।
सम्यक्फल हो प्राप्त जिनेश चढ़ाय के।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टद्रव्ययुत अर्घ्य चढ़ाऊँ नाथ मैं।
तभी ''चन्दनामती'' मिले गुणराज्य है।।
विमलनाथ भगवान का जन्मस्थल पूजूँ।
वन्दूँ कम्पिल धाम भव भव दुख से छूटूँ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

विमलनाथ पदपद्म, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम सद्म, कम्पिलजी तीरथ जजूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा

चंपक हरसिंगार, प्रभु पद पुष्पांजलि करूँ।
भरे सुगुण भंडार, कम्पिल जी तीरथ जजूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

कम्पिलपुरी तीर्थक्षेत्र के अर्घ्य (दोहा)

ज्येष्ठ वदी दशमी जहाँ, हुआ गर्भकल्याण।
विमलनाथ की वह धरा, पूजूँ करूँ प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथगर्भकल्याणकपवित्रकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी तिथि चौथ को, जन्मे विमल जिनेश।
अतः कम्पिला तीर्थ को, पूजें नमें सुरेश।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मकल्याणकपवित्रकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म तिथी में ही जहाँ, हुआ प्रभू वैराग्य।
उपवन कम्पिल तीर्थ का, अर्चूं लहूँ स्वराज्य।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ श्रेष्ठ तिथि, हुआ जहाँ पर ज्ञान।
समवसरण से पूज्य वह, कम्पिल तीर्थ महान।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शंभु छन्द)

श्री विमलनाथ तेरहवें तीर्थंकर का अर्चन करना है।
उनके चारों कल्याणक से, पावन तीरथ को भजना है।।
उस कम्पिल जी में अद्यावधि, प्राचीन कथानक मिलता है।
उसको पूर्णार्घ्य चढ़ाने से, निज मन का उपवन खिलता है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणक-पवित्रकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं कम्पिलपुरीजन्मभूमिपवित्रीकृतश्रीविमलनाथतीर्थंकराय नमः।

जयमाला

तर्ज-यदि भला किसी का कर न सको.....

कम्पिल जी की गौरव गाथा, सब मिलकर वृद्धिंगत करना।
तीर्थंकर विमलनाथ जी के, जन्मस्थल का अर्चन करना।।टेक0।।

कृतवर्मा पितु के महलों में, जयश्यामा माँ के आंगन में।
हुई पन्द्रह महिने रत्नवृष्टि, उस पुण्यांगण का क्या कहना।।
तीर्थंकर0।।1।।
जन्मे खेले जिस धरती पर, वहाँ स्वर्गपुरी भी आती थी।
सौधर्म इन्द्र जहाँ किंकर था, उस कम्पिलजी का क्या कहना।।
तीर्थंकर0।।2।।
जहाँ ब्याह किया और राज्य किया, फिर भी आसक्त न थे उसमें।
लख बर्फ नाश दीक्षा ले ली, उस तपोभूमि का क्या कहना।।
तीर्थंकर0।।3।।
तप से जहाँ घातिकर्म नाशे, कैवल्यज्ञान का उदय हुआ।
बना समवसरण गगनांगण में, उस ज्ञान स्थल का क्या कहना।।
तीर्थंकर0।।4।।
अपनी दिव्यध्वनि से प्रभु ने, फिर जन-जन का कल्याण किया।
सम्मेदशिखर से मोक्ष गये, उस सिद्धक्षेत्र का क्या कहना।।
तीर्थंकर0।।5।।
कम्पिल जी की यह धर्मकथा, जिन आगम ग्रंथ पुराण कहें।
लेकिन इतिहास भी है प्रसिद्ध, सति द्रौपदि के जन्मस्थल का।।
तीर्थंकर0।।6।।
है कथा महाभारत युग की, नृप द्रुपद यहाँ पर रहते थे।
उनकी कन्या द्रौपदी हुई, उसके सतीत्व का क्या कहना।।
तीर्थंकर0।।7।।
पांचाल देश की रजधानी, काम्पिल्यपुरी कहलाती थी।
द्रौपदी तभी पाञ्चाली कहलाई, इतिहास यही पढ़ना।।
तीर्थंकर0।।8।।
है वर्तमान गौरवशाली, कम्पिल की श्रीवृद्धि लखकर।
जिनमंदिर है प्राचीन जहाँ, प्रभु विमलनाथ का क्या कहना।।
तीर्थंकर0।।9।।

कम्पिलनगरी के कण-कण को, मेरा वंदन अन्तर्मन से।
मन मेरा भी हो विमल सदा, अनुरोध यही स्वीकृत करना।।
तीर्थंकर0।।10।।
जयमाला पढ़कर तीरथ की, पूर्णार्घ्य समर्पण करता हूँ।
''चंदनामती'' मति पूर्ण बने, यह अर्घ्य मेरा स्वीकृत करना।।
तीर्थंकर0।।11।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीविमलनाथजन्मभूमिकम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य प्राणी विमलप्रभु की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

।। इत्याशीर्वादः।।

भगवान श्री विमलनाथ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-झुमका गिरा रे.....

आरति करो रे,
तेरहवें जिनवर विमलनाथ की आरति करो रे।।टेक.।।
कृतवर्मा पितु राजदुलारे, जयश्यामा के प्यारे।
कंपिलपुरि में जन्म लिया है, सुर नर वंदें सारे।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
निर्मल त्रय ज्ञान सहित स्वामी की आरति करो रे।।1।।

शुभ ज्येष्ठ वदी दशमी प्रभु की, गर्भागम तिथि मानी जाती।
है जन्म और दीक्षाकल्याणक, माघ चतुर्थी सुदि आती।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
मनपर्ययज्ञानी तीर्थंकर की आरति करो रे।।2।।

सित माघ छट्ठ को ज्ञान हुआ, धनपति शुभ समवसरण रचता।
दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी और भव्यों का मनः कुमुद खिलता।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
केवलज्ञानी अरिहंत प्रभू की आरति करो रे।।3।।

आषाढ़ वदी अष्टमि तिथि थी, पंचम गति प्रभुवर ने पाई।
शुभ लोक शिखर पर राजे जा, परमातम ज्योती प्रगटाई।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
उन सिद्धिप्रिया के अधिनायक की आरति करो रे।।4।।

हे विमल प्रभू! तव चरणों में, बस एक आश यह है मेरी।
मम विमल मती हो जावे प्रभु, मिल जाए मुझे भी सिद्धगती।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
''चंदना'' स्वात्मसुख पाने हेतू आरति करो रे।।5।।

कम्पिलपुरी तीर्थ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-फूलों सा चेहरा तेरा.....

कम्पिलपुरी तीरथ मेरा, पावन परमधाम है,
आरती का थाल ले, तीर्थधाम को चलें, जिनधर्म की शान है।।टेक.।।

तेरहवें तीर्थंकर श्री विमल हैं, जन्म कम्पिलापुर में लिया।
धनद ने माता पिता के महल में, पन्द्रह मास रत्नवृष्टि किया।।
देव वहाँ आए, कल्याणक मनाए, उत्सव मनावें नगरी में-2
कृतवर्मा पितु, जयश्यामा माँ का, देखो खिला भाग्य है।।
आरती का थाल ले.....।।1।।

आगम में वर्णित है एक गाथा, सती द्रौपदी का कथानक जुड़ा।
राजा द्रुपद की कन्या द्रौपदी, जन्मस्थान यहीं का कहा।।
पांचाल नगरी की, राजधानी है ये, द्रौपदी तभी पाञ्चाली हुई-2
यह भूमी है ऐतिहासिक, जग भर में विख्यात है।।
आरती का थाल ले.....।।2।।

प्राचीन इक जिनमंदिर यहाँ है, गंगा किनारे नगरी बसी।
जन जन की श्रद्धा का केंद्र है यह, हरिषेण चक्री की भूमी यही।।
मैं भी करूँ दर्शन, शीश झुका वंदन, ''चंदनामती'' मुझे शक्ती मिले।
आत्मा मेरी निर्मल बने, पावे परम धाम है।।
आरती का थाल ले.....।।3।।